5BFZ3J

पाठ–8

स्वामी आत्मानंद

पाठ परिचय– छत्तीसगढ़ के संत, महापुरुष अउ विदुषी मन मनखे सेवा के जबर काम करे हें। गुरु घासीदास, धनी धरमदास, भक्त वल्लभाचार्य, मन के नाँव अजर–अमर हे। इही कड़ी म स्वामी आत्मानंद घलो बड़े जन महात्मा रिहिस। एहा हल्का उमर म जवनहा मन म जागृति लाने के काम करिस। ए पाठ म हमन ओकर जिनगी के बारे म पढ़बो।

ए हा साठ बछर पहिली के बात ए। ओ समे म छोटे–छोटे नौकरी अमोल हो गे रहिस। नौकरी ला पाय बर जवनहा मन गजब उदिम करँय। फेर एक झन जवनहा अइसे निकलिस जउन हा सब ले बड़े परीक्षा पास करके नौकरी नइ माँगिस। भारतीय प्रशासनिक सेवा आजो सबले बड़े नौकरी म जाए के रद्दा ए। ए परीक्षा ल पास करइया मन कलेक्टर, कमिश्नर बनथें। इही परीक्षा ल रायपुर जिला के बरबंदा गाँव म 06 अक्टूबर 1929 म जनमे गुन्निक बेटा पास कर लिस। फेर ओकर मन म रिहिस खुल्ला रहिके सेवा करे के भाव। स्वामी विवेकानंद के रद्दा म चलके सेवा करे के भाव। ओहा बड़े परीक्षा पास करके छोड़ दिस नौकरी के रद्दा अउ स्वामी विवेकानंद के मानव सेवा के रद्दा म चलिस उही जवान आगू चलके छत्तीसगढ़ के नाँव देश भर म बगराइस। ओला हमन स्वामी आत्मानंद के नाँव ले जानथन। ओकर नानपन के नाँव तुलेन्द्र रिहिस।

स्वामी आत्मानंद के महतारी के नाँव भाग्यवती अउ ददा के नाँव धनीराम रहिस। बरबंदा के किसान परिवार म जन्मे धनीराम गांधी जी के रद्दा म रेंगइया गुरुजी रहिस। वर्धा के आश्रम म धनीराम ल बुनियादी शिक्षक के काम मिलिस। सँग म तुलेन्द्र घलो वर्धा आश्रम गइस। गांधी जी जब घूमे बर जाय त तुलेन्द्र ओकर लउठी ल कभू–कभू धर के आगू–आगू चल दय। गांधी जी के आसिरबाद नान्हे तुलेन्द्र ल मिलिस। उही हा जवान हो के विवेकानंद आश्रम नागपुर म रहिके गणित विषय म एम.एस–सी. करिस। सबले हुसियार विद्यार्थी होय के खातिर तुलेन्द्र

शिक्षण संकेत– गुरुजी लइका मन ल बतावँय के महापुरुष कोन ला कहिथें। देश के महापुरुष मन के बारे म बताए के बाद छत्तीसगढ़ के महापुरुष मन के चर्चा करँय अउ ऊँकर काम के बारे म बतावत ए पाठ ल शुरू करँय।

ला सोन के मेडल मिलिस। फेर आश्रम म रहत–रहत तुलेन्द्र के मन म मानव सेवा के भाव जाग गे। स्वामी विवेकानंद के संदेस अउ सिद्धांत ओकर हिरदे म बस गे। थोरिक दिन अपन घर रायपुर म रहिस। तभे एक दिन तुलेन्द्र अपन महतारी ल पूछिस – "दीदी, जाँव ?" ओहा अपन महतारी ल दीदी कहय।

महतारी समझिस, कहूँ जाय बर पूछत होही ? कहि दिस, ''जा न बेटा''। बस ओ बात ल महतारी के आसिरबाद मान के तुलेन्द्र रायपुर ले नागपुर आ गे। घर के मन गजब खोजिन। दाई–ददा रोइन–ललइन। दुनो रायपुर ले नागपुर गइन। तुलेन्द्र मिल गे, विवेकानंद आश्रम म। ददा धनी राम किहिस– "बेटा चल घर। सन्यासी झन बन। हमर आँखी के पुतरी अस। हमला जग अँधियार लागत हे। तोर नान–नान भाई–बहिनी हें। तँय बड़े बेटा अस, घर चल।"

तुलेन्द्र कहिस– "बाबू जी, तहीं ह तो मोला रद्दा बताए हस। चिट्ठी मन मा लिखस के बेटा बने रद्दा म रेंगे कर। कुमारग म झन चलबे। भगवान राम सहीं दुख पा के आन ला सुख देबे। सबके सेवा करबे। अपन–पर के भेद झन करबे। तोरे बात ला धर के ए रद्दा म आगू बढ़ गेंव बाबू।''

बेटा के बात ल सुनके धनीराम अकबकागे। महतारी कहिस "बेटा बने काहत हे। दाई–ददा बर तो सबो संसो करथें। ये बेटा हा जग भर के संसो करत हे। जान दव, बने रद्दा म।" दुनो परानी घर आगें।

बेटा रहिगे आश्रम म। तुलेन्द्र के नाँव धरागे ब्रह्मचारी तेज चैतन्य। रामकृष्ण आश्रम म रहिके काम करे लगिस तेज चैतन्य ह। फेर बड़े–बड़े तिरिथ अउ हिमालय पहाड़ म गइस। गुरु मन के बात सुनिस। तपसिया करिस। रामकृष्ण मिशन नागपुर आश्रम आइस। प्रवचन, सेवा के काम चलिस। ब्रह्मचारी तेज चैतन्य छत्तीसगढ़ के इतिहास अउ महिमा ला जानय–जनावय। रायपुर म स्वामी विवेकानंद हा नानपन म दू बछर अपन महतारी बाप के संग बूढ़ापारा म रहिस। स्वामी आत्मानंद ह सोचिस, जिहाँ दू बछर स्वामी विवेकानंद रहिस ओ रायपुर म कुछ करना चाही। इही सोच के रायपुर म बनइस विवेकानंद आश्रम। ये संकल्प ले गइस विवेकानंद शताब्दी बरस म। 1960 म तेज चैतन्य हा सन्यास ले के स्वामी आत्मानंद बनिस।

स्वामी आत्मानंद आश्रम म गरिबहा लइका मन रहि के पढ़िन–लिखिन। ओमन सब आज बड़े–बड़े पद म हावँय।

स्वामी आत्मानंद ह जंगल के बीच नारायणपुर म आश्रम शुरू करिस। बड़े स्कूल बनइस। आदिवासी लइका मन ल पढ़ाना शुरू करिस। आज नारायणपुर के स्कूल ले निकले लइका मन देस भर म बड़े काम करत हें। अकाल–दुकाल म स्वामी आत्मानंद गाँव–गाँव म जुन्ना तरिया ल अउ कोड़वइस। पचरी बँधवइस। किसान मन ल मदद करिस।

विवेकानंद आश्रम रायपुर म बहुत बड़ पुस्तकालय खोलिस। आज छत्तीसगढ़ के गाँव–गाँव म सरकार हा स्वामी आत्मानंद के नाँव म पुस्तकालय खोले हे।

स्वामी आत्मानंद के पाँच भाई म एक भाई बड़े साहित्यकार बनिस। उही भाई डॉ. नरेन्द्रदेव वर्मा ह छत्तीसगढ़ के बड़इ म सुन्दर गीत लिखिस "जय हो, जय हो छत्तीसगढ़ मइया", इही गीत ह चारों मुड़ा सुने जाथे।

दू भाई स्वामी आत्मानंद के रद्दा म चलके सन्यासी होगें। एक भाई ओमप्रकाश वर्मा, विश्वविद्यालय म प्रोफेसर हे। ओम प्रकाश वर्मा आत्मानंद विद्यापीठ घलो चलाथें। उहों लइका मन ल पढ़ाय जाथे। आदिवासी अउ गरीब लइका मन ल पढ़ाए–लिखाय के बड़े जगा बनगे हे विद्यापीठ हा। स्वामी आत्मानंद के बताय रद्दा म चलइया बहुत झन हें। सेवा, दया अउ समता के बिचार ह चारों मुड़ा बगरत हे। लिखइ–पढ़इ के उजास ला चारों मुड़ा बगराय के उदिम म सब लगे हें।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने

बछर	–	साल,वर्ष
अमोल	–	मूल्यवान
जवनहा	–	जवान, जवान–सा
रद्दा	–	रास्ता
महतारी	–	माँ
अँधियार	–	अँधेरा
चिट्ठी	–	पत्र
कुमारग	–	खराब रास्ता
तिरिथ	–	तीर्थ
जुन्ना	–	पुराना
तरिया	–	तालाब

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि

गुरुजी लइका मन के दू दल बनाके मुँहअखरा प्रश्न मन के अभ्यास करावँय। खुदे कई ठन प्रश्न पूछँय।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. खाल्हे लिखे प्रश्न मन के उत्तर लिखव –

(क) स्वामी आत्मानंद के बचपना के नाव का रहिस ?

(ख) गांधी जी संग ओकर भेंट कहाँ होइस ?

(ग) स्वामी आत्मानंद कहाँ रहिके पढ़िस ?

(घ) स्वामी आत्मानंद काकर विचार ले जादा प्रभावित होए रहिस ?

प्रश्न 2. सहीं उत्तर छाँट के लिखव :–

(क) विवेकानंद आश्रम रायपुर के स्थापना कोन करिस ?

(1) स्वामी विवेकानंद (2) स्वामी रामकृष्ण

(3) स्वामी आत्मानंद (4) स्वामी रामदास

(ख) स्वामी आत्मानंद ह आदिवासी लइका मन के पढ़ेबर आश्रम कहाँ बनाइस ?

(1) कोंडागाँव (2) बस्तर

(3) दंतेवाड़ा (4) नारायणपुर

प्रश्न 3. मानव सेवा अउ युवा जागृति बर स्वामी आत्मानंद ह का–का काम करिस, ओला लिखव।

प्रश्न 4. (क) "अरपा पैरी के धार महानदी हे अपार, इन्द्रावती ह पखारय तोर पइयाँ। जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मइयाँ" गीत ल कोन लिखे हे ? ए गीत के बारे म अपन सँगवारी मन सँग गोठियाव।

(ख) आठ–दस लइका मन के दल बनाके ये गीत ल गावव अउ भाव अभिनय करके नाचव।

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण

xfrfof/k

प्रश्न 1. गुरुजी ह ए पाठ के चार–पाँच वाक्य ल बोल के लिखावँय। कापी ल अदला–बदली करके जाँच करावँय। तखता म घलोक लिखँय।

प्रश्न 2. "जवनहा" शब्द "जवान" म हा जोड़ के बने हे, एकर मायने हे 'जवान सही'। 'हा' जोड़के कोनो दू शब्द बनावव, ओकर मायने लिखव अउ अपन वाक्य बनावव।

le>o

"दीदी" स्त्रीलिंग शब्द आय। एकर बहुवचन रूप हे–"दीदी मन"।

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखे शब्द मन के बहुबचन रूप लिखव–

लड़की, बहिनी, मामी, काकी

प्रश्न 4. तहूँ मन अइसने चार स्त्रीलिंग शब्द जेकर आखिर म "ई" के ध्वनि आवत होही तेला लिखव अउ ओकर बहुबचन रूप बनावव।

;kX;rk foLrkj

1. अइसने कोनो नामी मनखे के गाँव जानव जेन ह हल्का उम्मर म बड़े काम करे हे, ओला कक्षा म बतावव।

5BPV57